नए साल का हैरतअंगेज़ तोहफ़ा!

लेखन: फिलिस नेयलर

चित्र: जैक एन्डवैल्ट

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

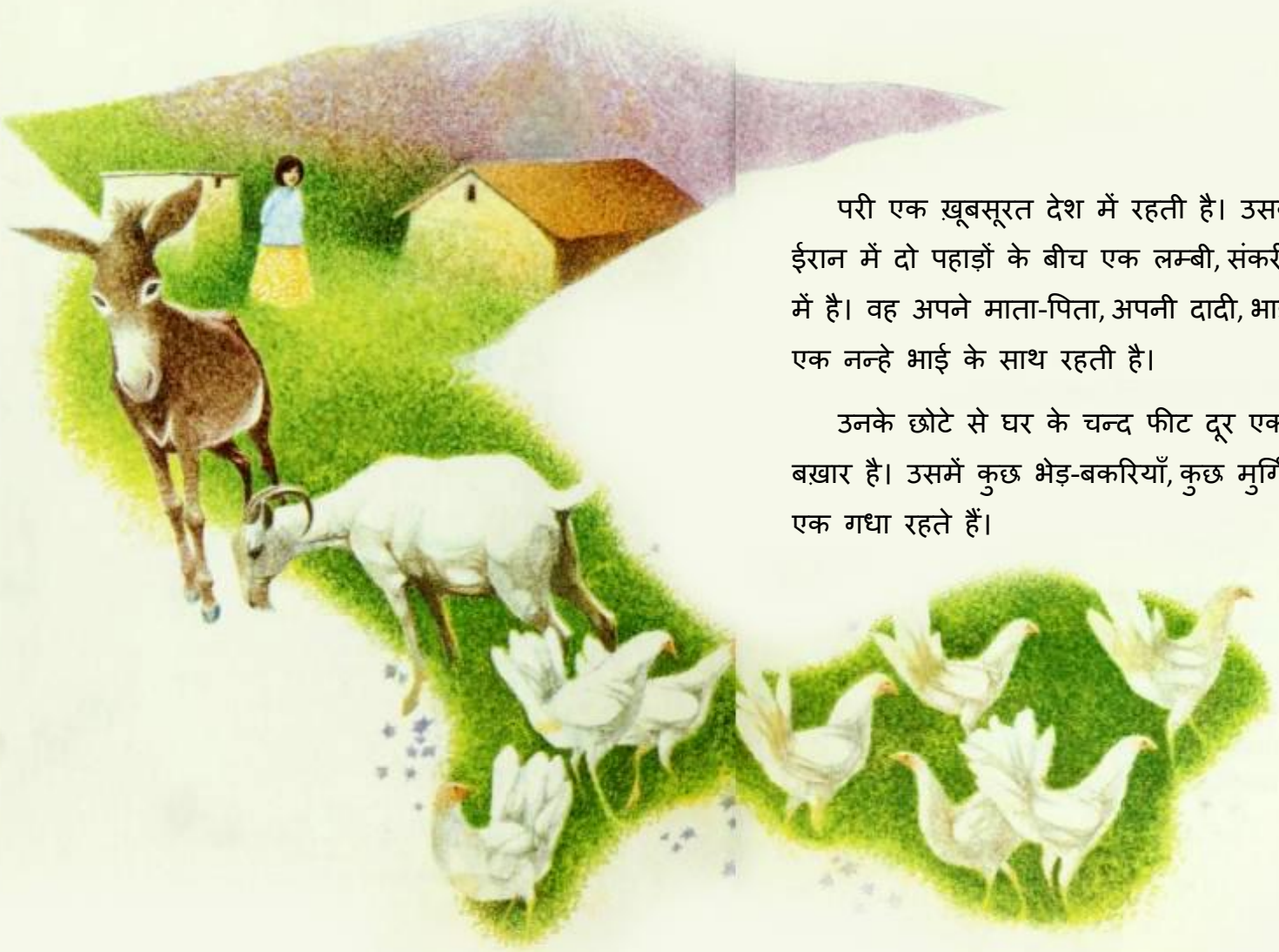

परी एक ख़ूबसूरत देश में रहती है। उसका घर उत्तरी ईरान में दो पहाड़ों के बीच एक लम्बी, संकरी, हरी-भरी वादी में है। वह अपने माता-पिता, अपनी दादी, भाई अहमद और एक नन्हे भाई के साथ रहती है।

उनके छोटे से घर के चन्द फीट दूर एक ताहवीले या बख़ार है। उसमें कुछ भेड़-बकरियाँ, कुछ मुर्गियाँ, एक बैल और एक गधा रहते हैं।

बसन्त बस आने ही वाला है। जल्द ही आड़ू और ख़ुबानी के पेड़ बौराने लगेंगे और भेड़ और बकरियाँ गर्मियों के चरागाह में मोटे-ताज़े होने जाएंगे।

पर इस सुबह परी अपनी आँखें खोलना ही नहीं चाह रही है।

वह अपने कालीन के एक कोने में गुड़ीमुड़ी पड़ी है। सोच रही है कि काश सुबह नहीं हुई होती। कल रात ही की तो बात है, जब सबने सोचा कि वह सो रही है, उसकी मेदर (माँ) और पेदर (पिता) अपने कमरे में बात कर रहे थे।

उसने मेदर को कहते सुना कि इस बार नए साल के दिन नए कपड़े नहीं होंगे। परी ऐसी बात की कल्पना ही नहीं कर सकती!

"परी, क्या फिर से तुम्हें बताना होगा कि सुबह हो चुकी है," मेदर ने रसोई से हाँक लगाई।

"शायद वह एक पौधा है और उसकी जड़ें कालीन में गहरे जा जम चुकी हैं," पेदर ने उसे छेड़ते हुए कहा।

परी बिना मुस्कुराए उठी। उसने अपनी लम्बी, भारी स्कर्ट पहनी। तब अपने सोने वाला कालीन लपेटा। जब वह रसोई में पहुँची अहमद वहाँ पहले से मौजूद था। मेदर ने नाश्ता तैयार कर रखा था। परी ने अपनी रोटी पनीर और दही के साथ खाई।

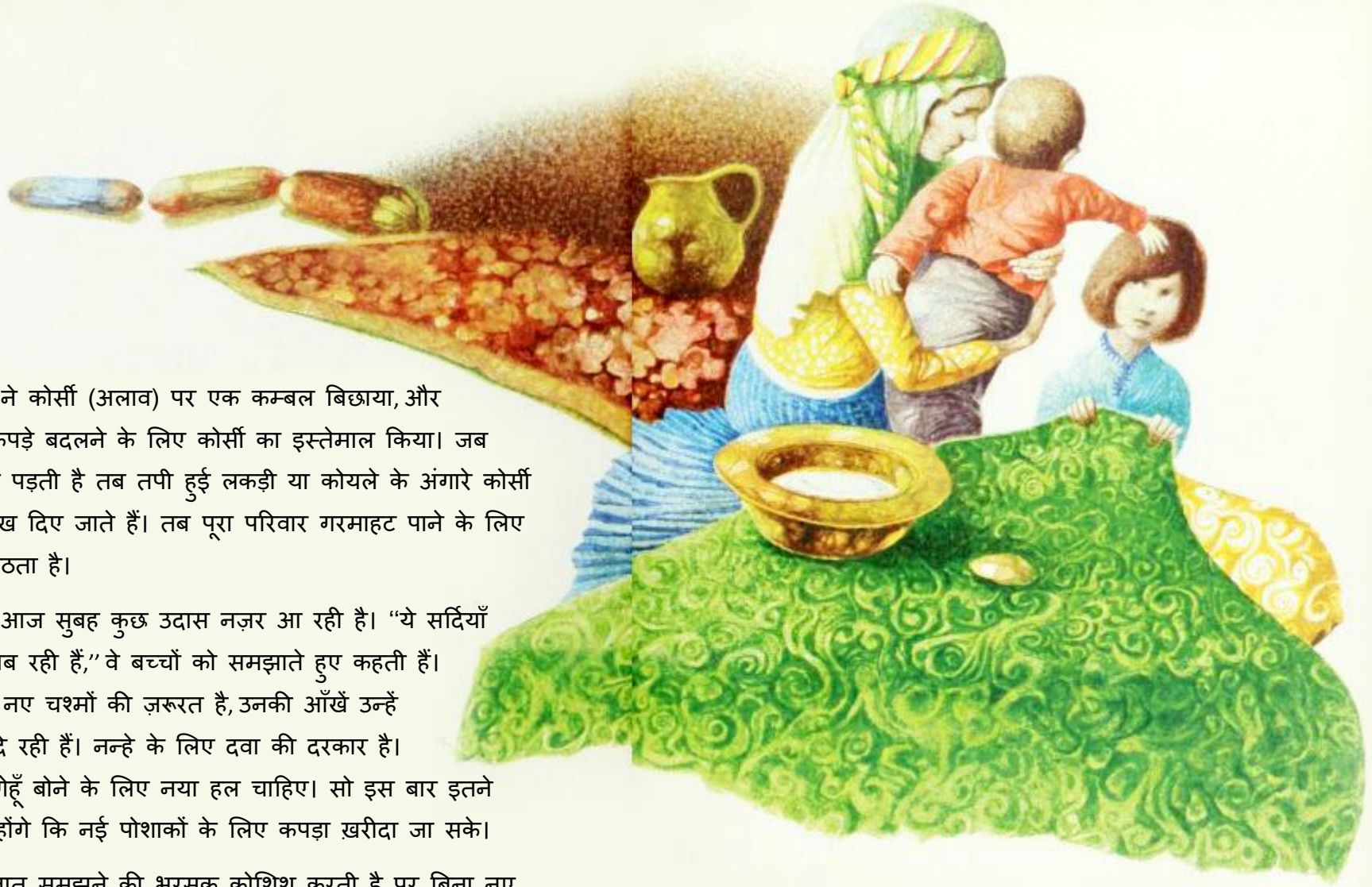

मेदर ने कोर्सी (अलाव) पर एक कम्बल बिछाया, और नन्हे के कपड़े बदलने के लिए कोर्सी का इस्तेमाल किया। जब बहुत ठण्ड पड़ती है तब तपी हुई लकड़ी या कोयले के अंगारे कोर्सी के नीचे रख दिए जाते हैं। तब पूरा परिवार गरमाहट पाने के लिए वहीं आ बैठता है।

मेदर आज सुबह कुछ उदास नज़र आ रही है। "ये सर्दियाँ काफ़ी ख़राब रही हैं," वे बच्चों को समझाते हुए कहती हैं। "दादी को नए चश्मों की ज़रूरत है, उनकी आँखें उन्हें तकलीफ़ दे रही हैं। नन्हे के लिए दवा की दरकार है। पेदर को गेहूँ बोने के लिए नया हल चाहिए। सो इस बार इतने पैसे नहीं होंगे कि नई पोशाकों के लिए कपड़ा ख़रीदा जा सके।

परी बात समझने की भरसक कोशिश करती है, पर बिना नए कपड़ों के नए साल के दिन के बारे में सोचना नामुमकिन ही है।

नए साल का दिन बसन्त के पहले दिन पड़ता है। यह साल का सबसे खुशी का दिन होता है, मिठाइयों, गीत और नाच से भरपूर। सब लोग सर्दियाँ खत्म होने की खुशी में नए कपड़े पहनते हैं।

परी पिछले साल को याद करती है। उसके ममेरे भाई-बहन, मामू और मामी सब तोहफ़े ले कर घर आए थे।

हसन मामू अपना अकॉर्डियन भी साथ लाए थे। उन्होंने उसे बजाया था और पूरा परिवार मस्ती से नाचा था।

एक मेज़ पर रंग-बिरंगे अण्डे, मोमबत्तियाँ और कटोरों में सोन मछली सजाई गई थी।

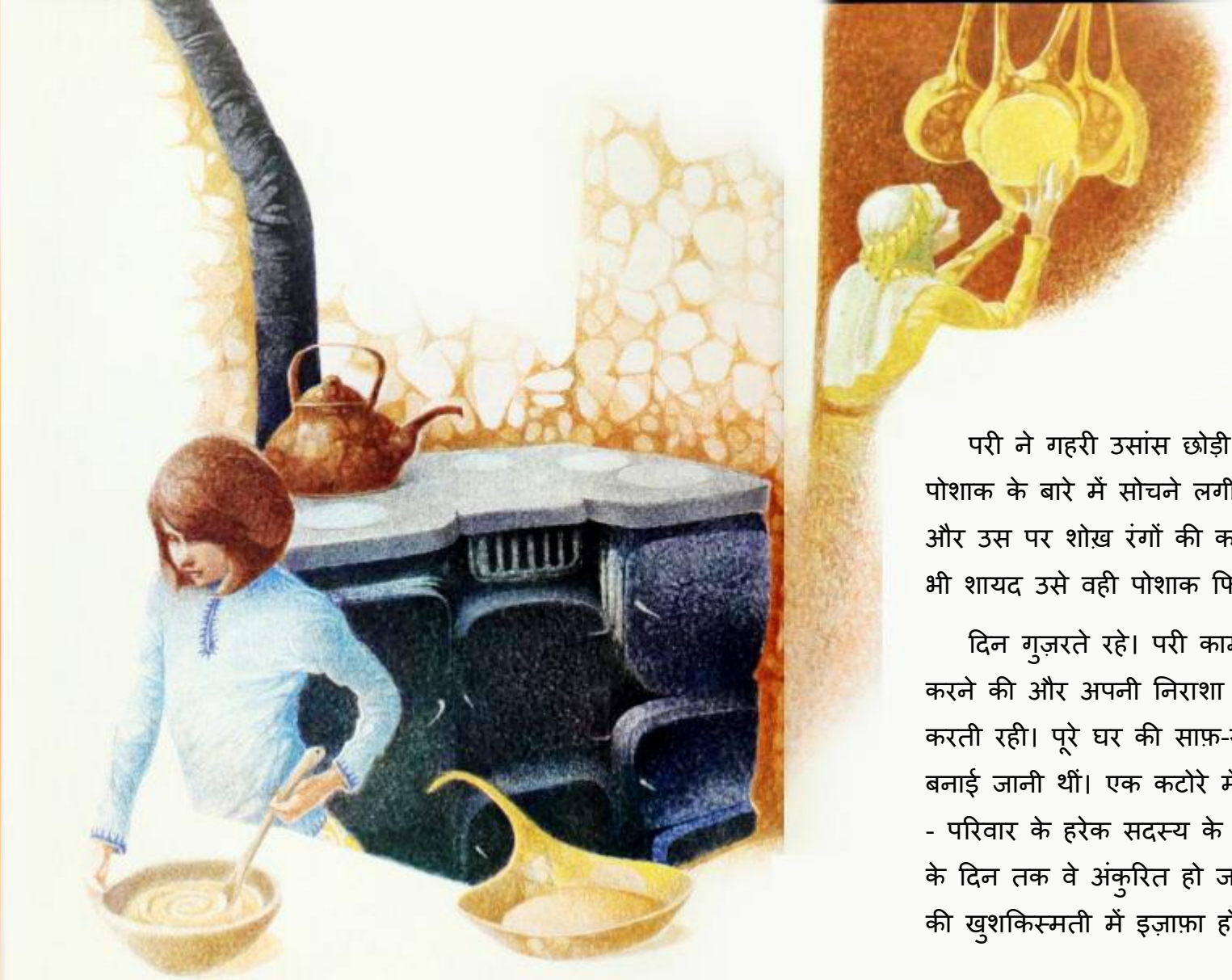

परी ने गहरी उसांस छोड़ी और पिछले साल की पोशाक के बारे में सोचने लगी। वह फ़र्श तक लम्बी थी और उस पर शोख़ रंगों की कशीदाकारी थी। इस साल भी शायद उसे वही पोशाक फिर से पहननी पड़ेगी!

दिन गुज़रते रहे। परी कामकाज में भरसक मदद करने की और अपनी निराशा को छिपाने की कोशिश करती रही। पूरे घर की साफ़-सफ़ाई करनी थी। मिठाइयाँ बनाई जानी थीं। एक कटोरे में गेहूँ के दाने बोए जाने थे - परिवार के हरेक सदस्य के लिए एक। ताकि नए साल के दिन तक वे अंकुरित हो जाएं। कहते हैं इससे परिवार की खुशकिस्मती में इज़ाफ़ा होता है।

एक शाम परी और अहमद मुँह लटकाए, मेज़ पर सजाने के लिए बत्तीदानों को चमका रहे थे।

पेदर पानी की बाल्टी लिए आए। "तुम दोनों के चेहरों से ऐसा लग रहा है मानो सूरज हमेशा-हमेशा के लिए डूब चुका है।"

"मैं सोच रहा हूँ कि सब यह देख लेंगे कि नए साल का जश्न मनाते वक्त मैं पुराने कपड़े पहने हूँ," अहमद ने आहिस्ता से कहा।

दादी नन्हे को पालने में झुला रही थीं। उन्होंने दाँत किटकिटाए और भौंहे चढ़ा लीं। "सब देखेंगे कि तुम्हारे दो मज़बूत पैर और हाथ हैं। सबको ख़ुश करने के लिए इतना ही काफ़ी होगा।"

"पर कुछ तो नया होना चाहिए ना," परी ने शिकायती लहजे में कहा। आख़िर एक यही तो पूरे साल में नई चीज़ों का वक्त होता है।"

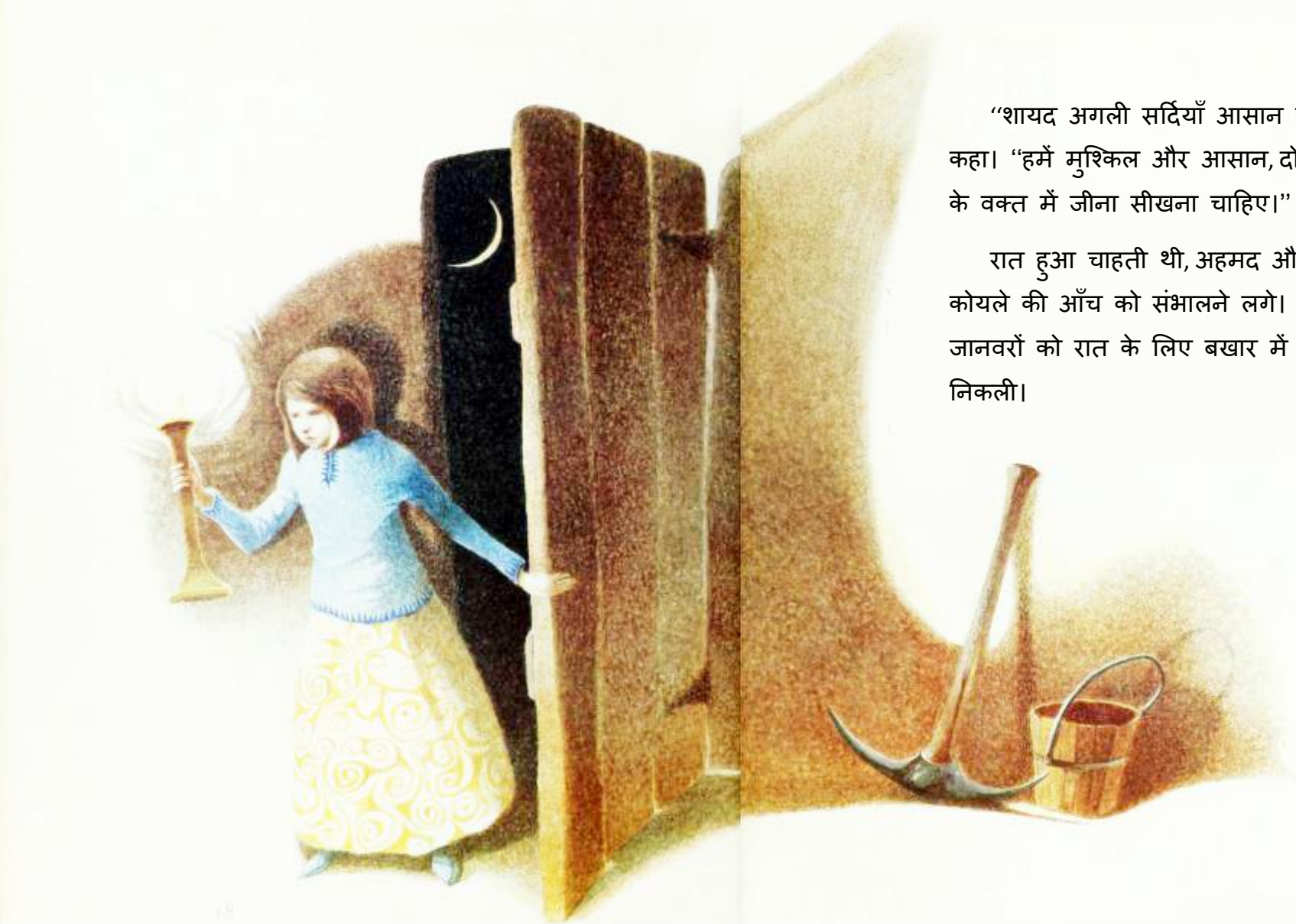

"शायद अगली सर्दियाँ आसान हों," मेदर ने कहा। "हमें मुश्किल और आसान, दोनों ही तरह के वक्त में जीना सीखना चाहिए।"

रात हुआ चाहती थी, अहमद और पेदर कोयले की आँच को संभालने लगे। इधर परी जानवरों को रात के लिए बखार में घुसाने निकली।

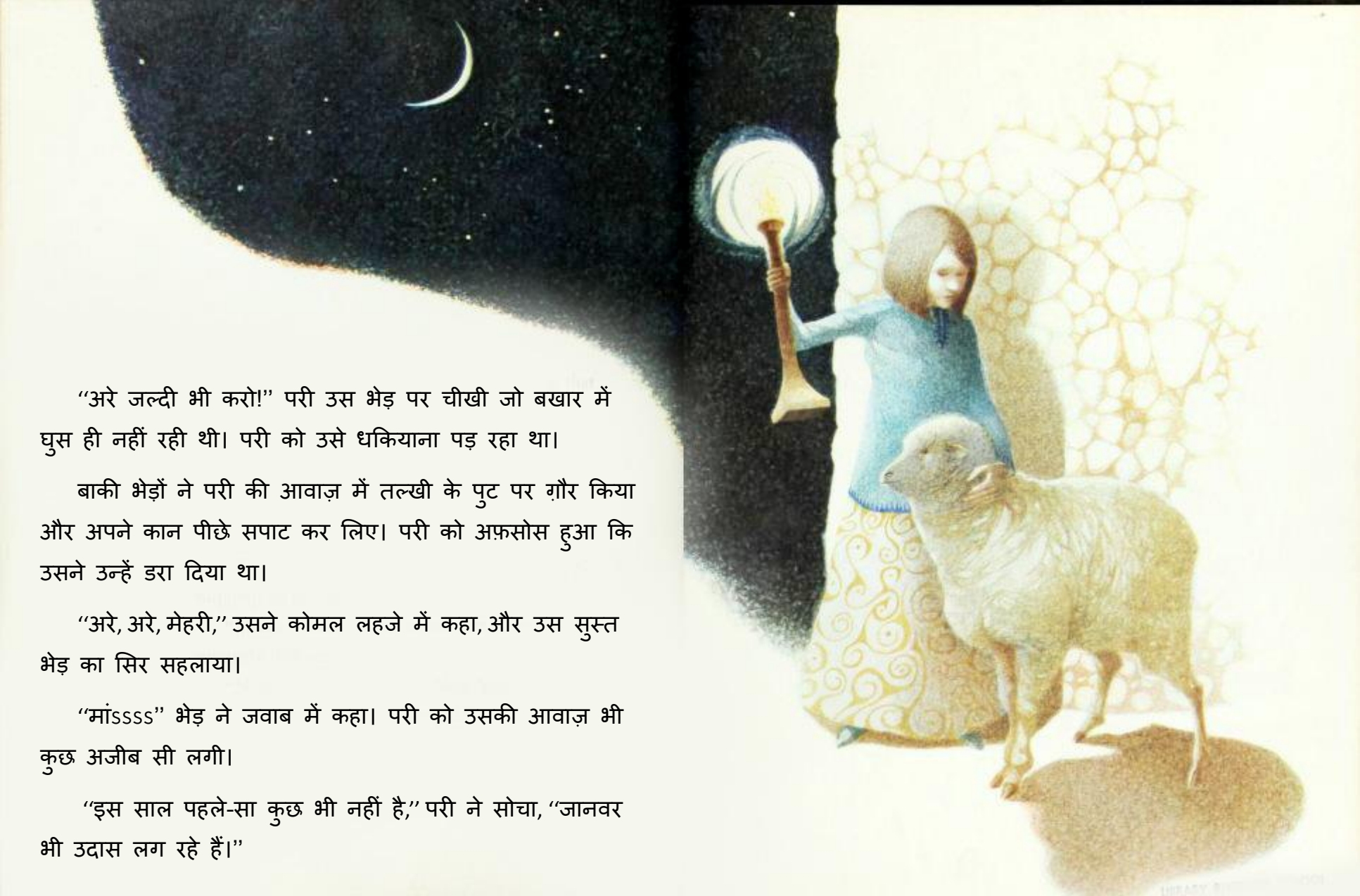

"अरे जल्दी भी करो!" परी उस भेड़ पर चीखी जो बखार में घुस ही नहीं रही थी। परी को उसे धकियाना पड़ रहा था।

बाकी भेड़ों ने परी की आवाज़ में तल्खी के पुट पर ग़ौर किया और अपने कान पीछे सपाट कर लिए। परी को अफ़सोस हुआ कि उसने उन्हें डरा दिया था।

"अरे, अरे, मेहरी," उसने कोमल लहजे में कहा, और उस सुस्त भेड़ का सिर सहलाया।

"मांssss" भेड़ ने जवाब में कहा। परी को उसकी आवाज़ भी कुछ अजीब सी लगी।

"इस साल पहले-सा कुछ भी नहीं है," परी ने सोचा, "जानवर भी उदास लग रहे हैं।"

परिवार रात को सोने के लिए तैयार हुआ।

परी दरअसल दादी के साथ एक कमरे में सोती है। वह अपने कालीन पर लेटी और कम्बल से सिर ढ़क लिया। पर उसे नींद नहीं आई। वह खिड़की से चाँद को पहाड़ों के ऊपर उठता देखती रही। उसे यह खयाल खाए जा रहा था कि नए साल के दिन पुराने कपड़े पहन उसे कितना बुरा लगेगा।

चारों ओर चुप्पी पसर गई, सिवा कमरे के दूसरी ओर से आते दादी के हल्के खर्राटों के। तब अचानक परी को लगा कि मेहरी धीमी आवाज़ में मिंमिया रही है। वह उठ बैठी, और ध्यान से सुनने लगी।

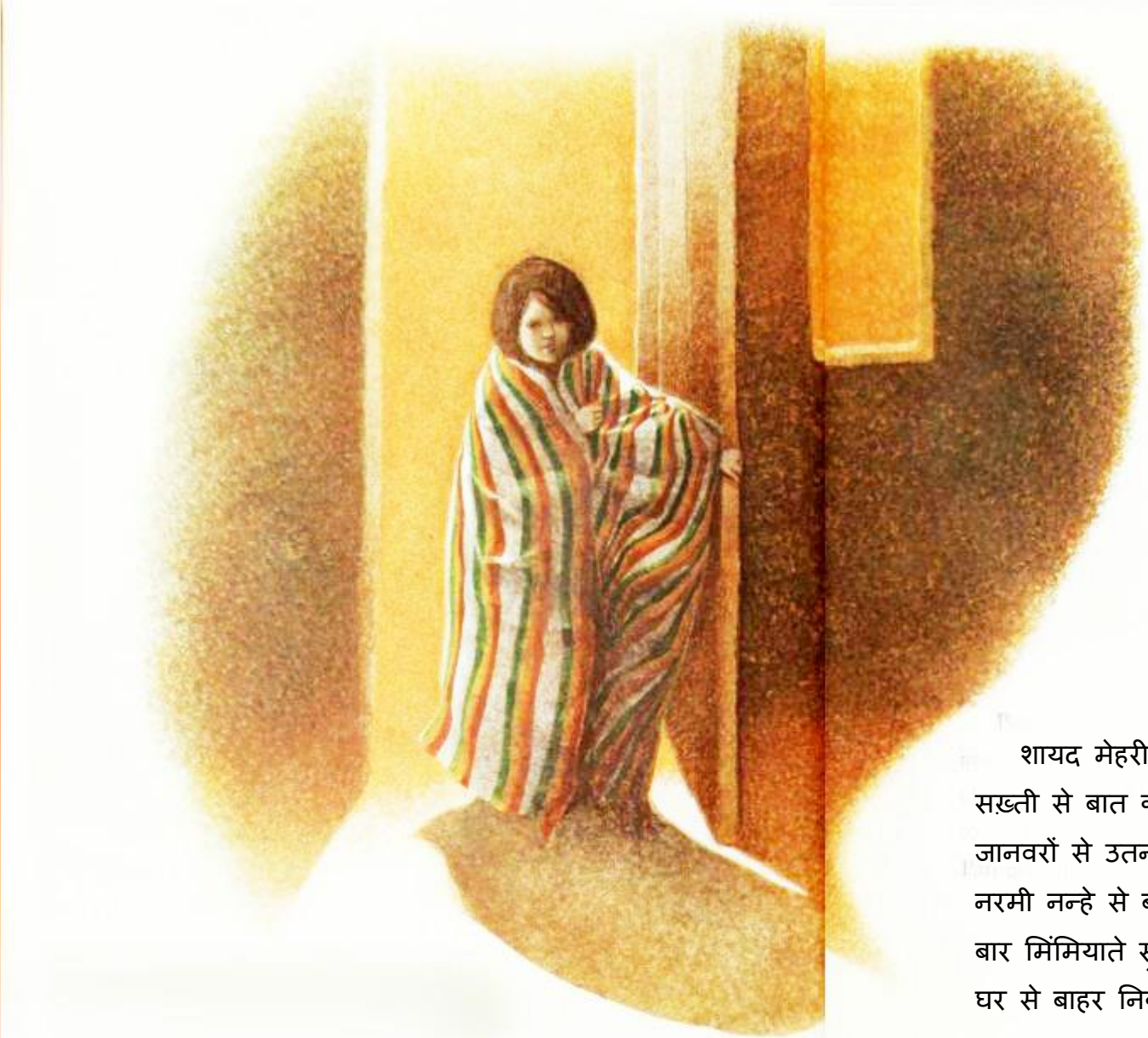

शायद मेहरी इस वजह से दुखी है क्योंकि परी ने सख़्ती से बात की थी। पेदर हमेशा हिदायत देते थे कि जानवरों से उतनी ही नरमी से बरताव करो जितनी नरमी नन्हे से बरतते हो। जब परी ने मेहरी को दूसरी बार मिंमियाते सुना, वह कालीन से उठी और दबे पाँव घर से बाहर निकली।

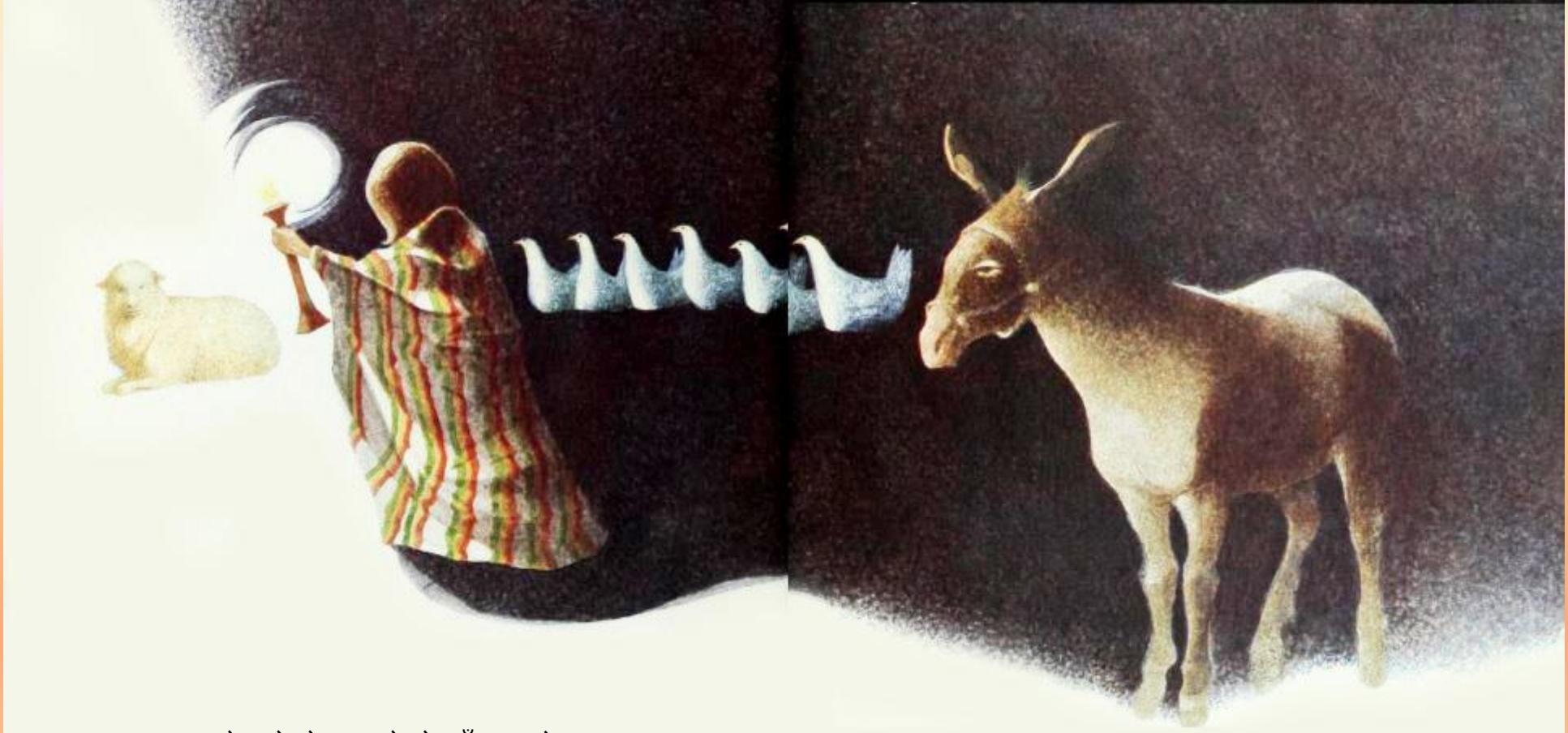

बखार के बड़े से दरवाज़े से चाँद पुरज़ोर चमक रहा था। उसकी रोशनी में परी ने मुर्गियों को अण्डे सेते देखा। गधा एक कोने में ऊँघता नज़र आया। बकरियाँ बैल के पास एक झुण्ड बनाए पुआल पर सो रही थीं, और पास ही भेड़ें भी। पर मेहरी अकेली दूर बैठी थी। परी उसके पास बढ़ी।

''मैं दरअसल इतना गुस्से से नहीं बोलना चाहती थी,'' परी ने हाथ फैला मेहरी से कहा। पर तब वह ठिठक कर रुक गई, क्योंकि मेहरी से सटा एक नन्हा मेमना था!

परी की काली आँखें अचरज से चौड़ा गईं। वह पुआल पर उँकड़ू बैठी और अंधेरे में ही मेमने को निहारने लगी। तब वह तेज़ी से घर की ओर भागी।

अपने माता-पिता के कमरे में वह चीखती हुई घुसी, "उठो! जगो! मेहरी ने हमें नए साल का हैरत भरा तोहफ़ा दिया है।"

पेदर उठ बैठे और बत्तीदान को टटोलने लगे। मेदर भी जाग गई, दादी और अहमद भी शोर सुन वहीं आ गए।

"अरे, जल्दी से चलो ना!" परी हड़बड़ी में बोली और उनींदे परिवार को बखार की ओर ले गई।

पेदर के बत्तीदान के उजाले में सबने उस रोएंदार ऊन के पुलिन्दे को अपनी टाँगों पर खड़े होने की कोशिश करते देखा। अचानक नन्हे मेमने ने अपनी माँ के गर्म शरीर की टेक ले ली। मेहरी सावधानी से अपनी जीभ से उसे चाटने लगी।

"हम इसे नए साल के दिन अपने सभी दोस्तों को दिखाएंगे!" अहमद खुशी से चहक कर बोला।

"और हम इसे अपने चेहरे और नाक चाटने देंगे," परी हंस कर बोली। "बसन्त के लिए हमारा नया तोहफ़ा यही होगा!"

कुछ नए शब्द

कोर्सी - कॉफी टेबल के आकार का अलाव-चूल्हा, जो अमूमन बैठक या सोने के कमरे में होता है। लकड़ी या कोयले की आग बाहर जलाई जाती है। और जब लकड़ी या कोयला तप कर लाल अंगारों में बदल जाते हैं उन्हें जाली में उठा कर लाया जाता है और कोर्सी के नीचे रखा जाता है। लोग गरमाहट पाने के लिए इसके गिर्द बैठते हैं।

मेदर - माँ।

मेहरी - भेड़ को दिया गया नाम।

पेदर - पिता।

ताहवीले - बखार या जानवरों की जगह।